:- प्रथम अध्याय :-

धर्मवीर भारती : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

प्रथम अध्याय

"डा.धर्मवीर भारती - व्यक्तित्व एवं कृतित्व"

व्यक्तिपरिचय --

आधुनिक काल में ऐसे साहित्यिक कम ही पाये जाते हैं, जिनका एक साथ कहानी, नाटक, उपन्यास, कविता, आलोचना, निबन्ध, पत्रकारिता आदि अलग-अलग विधाओंपर समान रूप से अधिकार हो। ऐसे ही गिने-चुने साहित्यकारों में से धर्मवीर भारती जी एक महत्त्वपूर्ण साहित्यिक रहे हैं। अपने लेखन काल में भारती जी ने दो उपन्यास, लगभग बीस-पच्चीस कहानियाँ, एक दो समीक्षा की पुस्तकें और एक नाटक दिया है। नाटकों की परंपरा में भारती का 'अन्धायुग' अपना विशेष महत्त्व रखता है। आज भी उन्होंने अपनी लेखनी को विराम नहीं दिया है। उनके कृतित्व को जान लेने से पहले उनके व्यक्तित्व को परखना जरूरी है --

(१) जन्म एवं वंश --

डा.धर्मवीर भारती का जन्म इलाहाबाद के 'अत्तरसुइया' नामक मुहल्ले में २४ सितम्बर, सन १९२६ ई.में हुआ। भारती की कुल-परम्परा का विस्तृत परिचय तो कहीं उपलब्ध नहीं है, किन्तु उनके दादा ने - जिन्हें सभी लोग 'बाबा' कहते थे, - 'मलका बिकटूरिया' के जमाने में एक मकान बनवाया था, जिसमें सबसे उपर लिखवाया था 'ओम् सत्यमेव जयते नानृतम्' और उसके नीचे लिखवाया था - 'दिल्लीश्वरो वा जगदीश्वरो वा', उनके बाबा शाहजहाँपुर के नीकट खुदागंज कस्बे के पुराने जमींदार थे। भारती जी के पिता स्व.श्री.चिरंजीवलाल वर्मा ने जमींदारी-रहन-सहन को छोड़कर बर्मा में ओवरसियरी की परीक्षा उत्तीर्ण की। कुछ दिन वे बर्मा में सरकारी नौकरी एवं ठेकेदारी करते रहे- पुन: उत्तर प्रदेश में लौटकर

पहले मिर्जापुर, तत्पश्चात् इलाहाबाद में स्थायी रूप से बस गये थे। भारती की माँ श्रीमती चंदादेवी आर्यसमाजी थी। उन्होंने अपने पुत्रपर आर्यसमाजी संस्कार डालने का प्रयत्न अवश्य किया होगा। इस सम्बन्ध में डा.चन्द्रभानु सोनवणे ने लिखा है -- "इस प्रकार का प्रयत्न जड़ अनुशासन बनकर रह गया होगा। संभवत: इसी कारण भारती का बालक मन 'लालनाश्रयिनों दोषा:' समझनेवाली आर्यसमाजी माँ के प्रति लगाव अनुभव नहीं कर सका। भारती के साहित्य में कहीं भी माँ का भावभीना स्मरण नहीं दिखाई देता। संभवत: भारती की माँ की थोड़ी-सी झलक उनकी 'यह मेरे लिये नहीं' कहानी में विद्यमान है।"[१]

(२) बचपन एवं शिक्षा --

प्रारंभिक शिक्षा इन्हें घर पर ही दी गई, तत्पश्चात् चौथे दर्जे से इन्हें अध्ययन हेतु डी.ए.बी.हाईस्कूल, इलाहाबाद भेजा गया। "बचपन में इन्हें 'बच्चन' नाम से पुकारा जाता था। हाईस्कूल के दिनों में बच्चन ने अपने नाम के आगे वर्मा के बदले 'भारतीय' लगाना आरंभ कर दिया। आगे चलकर यही 'भारतीय' 'भारती' में रूपान्तरित हो गया।"[२] भारती स्कूली पढ़ाई के आठवें दर्जे में पहुँच पाए थे कि, इनके पिताजी का स्वर्गवास हो गया। पश्चात् इनकी स्थिति काफ़ी विकट रूप धारण कर गई। पिता के असामयिक निधन ने उनके समक्ष अनेकों प्रश्नचिन्ह खड़े कर दिए। सौभाग्य से उनके मामाश्री अभयकृष्ण जोहरी इलाहाबाद में ही थे। मामाजी की प्रेरणा से इन्होंने सन १९४२ में कायस्थ पाठशाला इण्टर कॉलेज से इण्टरमीडिएट की परीक्षा उत्तीर्ण की।

इसी समय सन् १९४२ का 'भारत छोड़ो' आन्दोलन चला था, उसमें सक्रिय भाग लेने के कारण इन्हें एक वर्ष के लिए अपना अध्ययन कार्य स्थगित करना पड़ा था। "सन् १९४३ ई.में ये प्रयाग विश्वविद्यालय में प्रविष्ट हो गये तथा १९४५ में बी.ए.परीक्षा में सर्वाधिक अंक पानेपर इन्हें 'चिंतामणि घोष मंडल' पुरस्कार

---

१ डा.चंद्रभानु सोनवणे -'धर्मवीर भारती का साहित्य:सृजन के विविध रंग'- पृ.३।

२ डा.पुष्पा वास्कर -'धर्मवीर भारती व्यक्तित्व एवं कृतित्व'- पृ.१।

प्रदान किया गया । इससे भारती की अध्ययन के प्रति रूचि का विकास हुआ तथा इन्होंने सन १९४७ में एम.ए.हिन्दी की परीक्षा भी प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण कर ली ।[१] पश्चात् डा.धीरेन्द्र वर्मा के निर्देशन में इन्होंने 'सिध्द साहित्य' पर अनुसंधान किया तथा इन्हें पी,एच्.डी.की उपाधि प्रदान की गई । इसप्रकार इलाहाबाद में भारती ने अपनी शिक्षा समाप्त की। तत्पश्चात वे वहीं अध्यापक भी हुए ।

(३) आजीविका -

पिता के असामयिक निधन से भारती को आत्मनिर्भर होना पड़ा । मामा का सहयोग मिलते रहनेपर भी इनके व्यक्तित्व की विशिष्टता स्वावलंबन की रही है । बी.ए.की पढ़ाई के दौरान वे ट्यूशनें करते थे । एम.ए.में पढ़ाई करते समय पद्मकांत मालवीय के पत्र 'अभ्युदय' में अतिरिक्त समय (पार्ट टाईम) पर कार्य किया तथा उसी से खर्चा चलाते रहें । सन १९४८ लीटर प्रेस से प्रकाशित पं.इलाचंद्र जोशी के पत्र 'संगम' नामक साप्ताहिक में वे सह-संपादक के रूप में कार्य करते रहें । वहाँ इसी रूप में दो वर्षांतक कार्य किया । तदुपरांत इन्हें प्रयाग-विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग में प्राध्यापक का पद मिल गया । सन १९६० तक वे अध्यापन कार्यमें संलग्न रहें पश्चात 'धर्मयुग' के संपादक होकर बम्बई आ गये तथा वह आज हिन्दी के प्रतिष्ठित पत्रकारों एवं सम्पादकों में स्वीकृत हैं ।

(४) पारिवारिक जीवन --

धर्मवीर भारती के पारिवारिक जीवन के संबंधी काफी समय तक अफवाएँ फैलाई जाती रही हैं । काफ़ी सपयतक पूर्व पत्नीसंबंधी विवाद की चर्चा भी समकालीन लेखकों के मुख से सुनाई पड़ रही थी । इसके बारे में डा. हुकुमचंद राजपाल कहते है --"हमने भारती जी से जीवन सम्बन्धी जानकारी चाही तो इन्होंने नि:संकोच उन तथ्यों को भी सहज रूप में उद्घाटित कर दिया जिन्हें मैं प्राय: अनहोनी अफवाहें माना करता था ।"[२] श्री.उपेन्द्रनाथ 'अश्क' के 'निलाम

---

१ डा.हुकुमचंद राजपाल -'धर्मवीर भारती : साहित्य के विविध आयाम' - पृ.१४ ।

२ - वही - - वही - पृ.१४ ।

प्रकाशन गृह' में टाइपिस्ट के रूप में स्थित कांता कौशली नामक पंजाबी किशोरी से भारती का विवाह हुआ। कुछ दिनों तक दाम्पत्य जीवन सफ़लतापूर्वक चला। दरम्यान कान्ता भारती ने एक बच्ची को जन्म दिया धीरे-धीरे दाम्पत्य जीवन में मनमुटाव के कारण दरार पड़ने के कारण इनका प्रथम विवाह असफल रहा। कुछ ही दिनों में भारती के प्रणयजीवन में एक अन्य नारी का प्रवेश हुआ - विष्णु ब्रह्मचारी की बहन पुष्पा शर्मा का। भारती का वर्तमान वैवाहिक जीवन पुष्पा भारती के साथ सुखमय है। कांताजी की लड़की भी भारती के ही पास है। कांताजी का भी दूसरा विवाह हो गया है और वे कांता भारती से कान्ता पंत बन चुकी है। धर्मवीर भारती की पत्नी श्रीमती पुष्पा भारती इनके सुखी, स्थायी जीवन का दृढ़ आधार रही है। इनकी संतानें है - पारमिता, किंशकु तथा प्रज्ञा। स्थायी रूप से ५, शाकुन्तल, साहित्य सहवास, बांद्रा पूर्व, बम्बई-५१ में निवास कर रहे हैं।

(५) व्यक्तित्व --

भारती का व्यक्तित्व रोमांटिक है और उनका यह रोमानी स्वभाव अनेक संघर्षों की भूमिकाओं से निर्मित हुआ है। यही कारण है कि, हर संघर्ष, हर मनोमंथन उन्हें एक नयी विधा से जोड़ा गया है। भारती की माँ तथा डा. धीरेन्द्र वर्मा आर्यसमाजी होने के कारण बचपन में उनपर आर्यसमाज का प्रभाव पड़ा। परिणामत: भारती को निर्मम तर्कशीलता और मर्यादावादी जीवनदृष्टि मिली। बचपन में थोड़ी-सी समझ आ जाने के बाद भारती के बालक मनपर ईसामसीह का प्रभाव पड़ा। किशोरावस्था में उनके मन में राष्ट्रीय भावना के कारण स्वतंत्रता को पाने के लिए भारती ने १९४२ के आंदोलन में भाग लिया। भारती सुभाषचन्द्र बसू से अत्यधिक प्रभावित थे। किशोरावस्था में ही भारती को आर्थिक विपन्नता के कारण आत्मनिर्भर, स्वावलंबी बनना पड़ा।

भारती के व्यक्तित्वपर छायावादी भावधारा का प्रभाव दूर तक है। "भारती को दो चीजों का खास शौक है और वे चीजें है -- पढ़ाई और घुम्मकड़ी।"[१]

१ डा० चंद्रभानु सोनवणे -'धर्मवीर भारती का साहित्य : सृजन के विविध रंग'- पृ.१०।

यात्राओं से भी बढ़कर भारती को पढ़ाई का शौक कहीं अधिक है। इस शौक के पीछे उनकी जानने की प्यास विद्यमान है। पश्चिमी साहित्यकारों में शेले और आस्करवाईल्ड उन्हें विशेष प्रिय रहे हैं। यात्रा और पढ़ाई के समान ही भारती को फूलों का बेहद शौक है।

भारती स्वभाव से संकोची और कल्पनाप्रिय व्यक्ति हैं। उन्होंने अपने 'अहंकारहीन गुस्से' और 'स्वार्थहीन नफ़रत' का उल्लेख किया है। उनकी पसंद का रंग नीला है। उनका प्रिय गीत है -- ये रातें, ये मौसम, ये हंसना; इन्हें ना भुलाना, हमें भूल जाना। इसी प्रकार उनकी प्यारी गजल है - दो गज जमीं भी ना मिली कूचा-ए-यार में। भारती को इलाहाबाद शहर बेहद प्यारा लगता है। इन शौकों, पसंदों आदि के अतिरिक्त भारती की कुछ विशेष आदतें भी हैं। उन्हें टहलने की बीमारी - सी है। उन्हें गरम सोडावाटर पीने की आदत है। इसी प्रकार उन्हें एक ओर जल्दबाजी की आदत है, तो दूसरी ओर वक्त की पाबन्दी से उन्हें परहेज है।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि, भारती अंतर्मुखी वृत्ति के रोमांटिक प्रकृति के व्यक्ति हैं। प्रेम और काम के संघर्ष और द्वैत ने इस व्यक्तित्व को कुछ अंशों में कुण्ठित किया है। इसी कारण उनके व्यक्तित्व में अनेक परतें छिपी हैं।

(६) देशान्तर परिभ्रमण --

धर्मवीर भारती को विवशताओं और सीमाओं के बीच रहते हुए अनेक यात्राओंपर जाने के अवसर मिले हैं। उन्होंने विदेशों की भी अनेक यात्राएँ की हैं। सन १९६१ में वे कॉमनवेल्थ रिलेशन्स कमिटी के आमंत्रण पर प्रथमत: इंग्लैंड और यूरोप की यात्रापर गये। पश्चिम जर्मन सरकार के आमंत्रणपर सन् १९६२ में इन्हें जर्मनी यात्रा का अवसर मिला तथा इन्होंने सन १९६६ में मुक्तिवाहिनी के सहयोग से बांग्लादेश की गुप्त यात्रा सितम्बर में की और दिसम्बर में भारतीय स्थलसेना के साथ युध्द के वास्तविक मोर्चे के रोमांचक अनुभव भी उन्होंने प्राप्त किये हैं। भारती को मई, १९७४ में मारिशस की यात्रा का अवसर मिला था।

(७) प्राप्त सम्मान -

"भारती ने साहित्य की जो सेवा की है, उसके उपलक्ष्य में उन्हें सन १९६७ में 'संगीत नाटक अकादमी' का सदस्य मनोनीत किया गया था। इसके बाद सन् १९७२ में उन्हें भारत सरकार ने 'पद्मश्री' के बहुमान से सत्कृत भी किया है।" १

इस प्रकार हम देखते हैं कि, साहित्य की कई विधाओं में साहित्य सृजन करनेवाले भारती जी ने सफलता के साथ साहित्य-रचना की। वे मूलत: एक मूल्यान्वेषी सर्जक कलाकार हैं जिनमें परंपरा और युग को सही-सार्थक संदर्भों में प्रस्तुत करने की क्षमता है। भारती जी के जीवन-परिचय से अधिकांश पाठक अपरिचित हैं क्योंकि उनका जो कुछ संक्षिप्त जीवन-परिचय प्राप्त है, वह भी बड़ी कठिनाई के साथ। इसलिए उनका 'जीवनी' पक्ष या 'व्यक्तित्व परिचय' - पक्ष भी अपूर्ण ही रह जाता है। फिर भी जितना प्राप्य हो जाता है, उससे उनके व्यक्तित्व की एक झलक हमें प्राप्त हो जाती है।

कृतित्व --

धर्मवीर भारती हिन्दी साहित्य जगत् के जाने-माने साहित्यकार हैं। अभी तक उन्होंने अपनी कलम को थाम नहीं लिया है इसलिए निर्णायक रूप से उनके कृतित्वपर लिखना कठिन होता है क्योंकि समकालीन और जीवित लेखक की भाव या विचारधारा भविष्य में कुछ ऐसा मोड़ ले सकती है जिसकी हमें कल्पना तक नहीं हो सकती। फिर भी उन्होंने जो कुछ अब तक लिखा है, उसके बारे में हम जरूर कुछ-न-कुछ कह सकते हैं। धर्मवीर भारती जी ने सिर्फ सभी विधाओं में साहित्य रचना ही नहीं की बल्कि, उन्होंने 'अन्धायुग' जैसी रचनाओं का निर्माण कर नवीनता को भी प्रस्तुत किया है। इसमें मानव अस्तित्व एवं युग-सत्य का यथार्थ प्रकटीकरण करने में कवि सफल हुआ है। इस प्रकार साहित्य में नवीनता के आभास को प्रस्तुत करनेवाले भारती जी का कृतित्व इस प्रकार है --

---

१ डा. चंद्रभानु सोनवणे -'धर्मवीर भारती का साहित्य: सृजन के विविध रंग' पृ. १३।

(१) कवि भारती --

(१) दूसरा सप्तक - भारती का कवि रूप 'दूसरा सप्तक' के प्रकाशन से पूर्व प्रकाश में आ चुका था । सप्तकों में प्रकाशित कविताओं के साथ अन्य अनेक पत्रिकाओं में इनका कवि उभर रहा था । 'दूसरा सप्तक' में 'थके हुए कलाकार' से लेकर 'कविता की मौत' तक बारह कविताएँ संगृहीत हैं । इसमें संग्रहित अधिकांश कविताएँ युवक कवि के -हृदय में व्याप्त रूमानी भावों को ही रूपायित करती है । साथ ही कुछ रचनाओं में प्रेम की मांसलता की सूक्ष्मता व्यंजित हुई है । कुछ सामाजिक चेतना, विद्रोह और आक्रोश का रूप ग्रहण करती हुई प्रतीत होती है । इस प्रकार 'दूसरा सप्तक' की कविताओं में भारती के व्यक्तित्व का पर्याप्त प्रकाशन हुआ है । इस संग्रह की कुछ कविताएँ 'ठण्डा लोहा' में संकलित की गई हैं।

(२) ठण्डा लोहा - सन १९५२ में प्रकाशित 'ठण्डा लोहा' यह भारती का पहला काव्यसंग्रह है । यह एक स्फूट काव्य है । इसमें छह वर्षों की रचनाओं से चुनी हुई कविताएँ संकलित होकर 'दूसरा सप्तक' में से कई कविताएँ सम्मिलित की गई हैं । इसमें ३९ कविताएँ है ।"इस संग्रह की कविताओं में कवि की मस्ती, चुलबुलापन, रूमानियत, अल्हड़पन के साथ गहन प्रणयानुभूति, दर्द, टीस, कसक तथा युगबोध की सार्थक अभिव्यक्ति हुई हैं ।"[१] यह प्रथम काव्यसंग्रह होने के कारण कल्पना की कहीं-कहीं उड़ान भी देखने को मिलती हैं । इसमें कवि का दर्द, उसकी उदासी, निराशा, अप्राप्ति के संकेतों के साथ-साथ आशा, विश्वास एवं आस्था का स्वर भी मुखरित हुआ है । इसलिए 'ठण्डा लोहा' को प्रणयानुभूति का सुख-दु:ख मिश्रित काव्यसंग्रह कहा जाय तो अत्युक्ति न होगी । इस संकलन की अधिकांश कविताएँ रोमांटिक स्वर की हैं।

(३) सात वर्षा गीत --- १९५९ में प्रकाशित 'सात वर्षा गीत' यह भारती का दूसरा काव्यसंग्रह है । 'ठण्डा लोहा' की तरह यह भी एक स्फूट काव्य है । इस संग्रह के 'ठण्डा लोहा' की तरह तीन संस्करण निकल चुके हैं । इसमें सन् १९५२ से १९५९ ई. तक की कविताओं का संकलन किया है । इससे ज्ञात होता है कि,

---

१ हुकुमचंद्र राजपाल -'धर्मवीर भारती : साहित्य के विविध आयाम' - पृ. २२ ।

'सात गीत वर्ष' शीर्षक ही इन कविताओं की रचनाकाल की सूचना देता है। इस संकलन में 'प्रमुश्यु गाथा' से लेकर 'घाटी का बादल' तक ५१ कविताएँ संकलित हैं। प्रस्तुत संकलन की कविताओं में आस्था एवं अनास्था दोनों के रूप, स्वतंत्रता, स्वाभिमान एवं देशप्रेम की महत्ता का बखान किया है। इसमें प्रभु के प्रति आस्था कम अनास्था अधिक है। इस संग्रह की कविताओं में 'ठण्डा लोहा' की कविताओं के समान प्रणयभावना से सम्बन्धित कविताएँ सबसे अधिक हैं। मगर 'सात गीत वर्ष' का मुख्य स्वर 'ठण्डा लोहा' से अलग है।

(३) कनुप्रिया --- 'अंधायुग' के लेखन के पाँच वर्ष बाद डा. धर्मवीर भारती ने 'कनुप्रिया' प्रकाशित की है। सन् १९५९ में प्रकाशित 'कनुप्रिया' यह भारती का प्रबन्ध काव्य है। 'कनुप्रिया' पाकर खो देने की व्यथा भरी गूँज से गूँजित प्रेम की कहानी है। इसमें काव्यपूर्वराग, मंजरी-परिणय, सृष्टि संकल्प, इतिहास एवं समापन पाँच शीर्षकों में विभाजित हैं। 'कनुप्रिया' की मूल-संवेदना रोमांटिक प्रेम है, और अपनी रोमांटिक प्रेम संवेदना की अभिव्यक्ति के लिए राधा को अपनाया है। 'कनुप्रिया' में केवल एक ही पात्र है और वह है राधा। इस प्रबन्ध काव्य में कामभावनापर अतिरिक्त बल दीख पड़ता है। पूर्वराग के प्रसंग में राधा यमुना के नीले जल में घण्टों निर्वसन स्नान करती है और कृष्ण 'श्यामल प्रगाढ़ अथाह अलिंगन' की कामना व्यक्त करता है। 'कनुप्रिया' में कवि ने राधा एवं कृष्ण के प्रणय की मनःस्थितियों की विविधता प्रस्तुत कर व्यक्त किया है। 'कनुप्रिया' अपनी लाजवाब गीतात्मकता, प्रणयानुभूति के क्षणों की सरस एवं तन्मयतापूर्ण व्याख्या, युगानुकूलता के कारण हिंदी साहित्य में अपना खास स्थान रखती है।" [१]

(५) सपना अभी भी --- १९९४ में प्रकाशित इस काव्यसंग्रह में १९६९ से १९९३ तक की रचनाएँ संग्रहित हैं। इस संग्रह की कविताओं में विक्षोभ, आक्रोश, जिजीविषा और युयुत्सा के स्वर सुनाई पड़ते हैं। इस काव्यसंग्रह से ऐसा लगता है कि, कवि है मन पर प्रणय का सतरंगी ताना-बाना ही बुना हुआ दिखाई देता है।

---

१ डा. पुष्पा वास्कर -'धर्मवीर भारती : व्यक्तित्व एवं कृतित्व'- पृ. ५२।

भारती जी की कविताओं पर सामान्यत: समय का दबाव बहुत कम रहा है और 'सपना अभी भी' इसका अपवाद नहीं है।

डा. मूलचंद सेठिया लिखते है --"इस संग्रह की गिनी-चुनी कविताओं को छोड़ दे तो 'सपना अभी भी' असम्पृक्त रूप से जिया जा रहा है। यदि उपन्यासों के समांतर चर्चा करें तो ये कविताएँ 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' की अपेक्षा 'गुनाहों का देवता' के अधिक निकट प्रतीत होती हैं।" [१]

(२) नाटककार भारती --

(१) अंधायुग -- सन १९५५ में प्रकाशित 'अन्धायुग' भारती की ऐसी कृति है, जिसे कविता और नाटक दोनों विधाओं की महत्त्वपूर्ण उपलब्धी माना गया है। 'अन्धायुग' रंगमंच की दृष्टि में रखकर लिखा गया है। स्वयं भारती ने उसे 'दृश्य काव्य' कहा है। 'अंधायुग' हिंदी जगत में अपने ढंग की प्रथम नाट्य-काव्य-कृति है। इसका कथासूत्र महाभारत के रणान्त से उपजी हुई स्थितियों से सम्बध्द है। ""अन्धायुग' में भारतीय साहित्य के विख्यात महाभारत के रणसंग्राम के अठारहवें दिन की संध्या से लेकर प्रभास-तीर्थ में कृष्ण की मृत्यु तक के क्षण की कथा वर्णित है।" [२] यह कथावस्तु पाँच अंकों में विभाजित है। इसमें कवि ने अनास्था, अविश्वास, अमर्यादा, प्रतिहिंसा, प्रतिशोध एवं आत्मघात आदि की चर्चा करते हुए अन्तत: आस्था, विश्वास, मर्यादा, सत्य, धर्म, श्रध्दा एवं सद्भाव आदि वृत्तियों की जीवन में महत्त्ता प्रतिष्ठित की है। भारती की यह नाट्यकृति कई बार प्रकाशित, प्रसारित एवं मंचित हो चुकी है। मूल रूप में 'अन्धायुग' रेडिओ नाटक के रूप में लिखा गया था, जिसे आगे चलकर भारती ने वर्तमान रूप दे दिया है।

---

१ डा. मूलचंद सेठिया -'सपना अभी भी' की समीक्षा (प्रकर - अप्रैल १९९५) पृ.३१।

२ डा. हुकुमचंद राजपाल -'धर्मवीर भारती : साहित्य के विविध आयाम'- पृ.४६।

(३) एकांकीकार भारती --

(१) नदी प्यासी थी --

'नदी प्यासी थी' धर्मवीर भारती के एकांकियों का संकलन सन १९५४ ई. में हुआ। इस संकलन में पाँच एकांकी संग्रहीत हैं। वह निम्नलिखित है --

(अ) नदी प्यासी थी। (आ) नीली झील।

(इ) आवाज का नीलाम। (ई) संगमरमर पर एक रात।

(उ) सृष्टि का आखिरी आदमी।

उपर्युक्त एकांकीयों में से प्रथम चार रंगमंचीय एकांकी है, तथा अंतिम एकांकी रेडिओ के लिए लिखा गया है।

(४) कहानीकार भारती --

(१) चाँद और टूटे हुए लोग --

'चाँद और टूटे हुए लोग' यह भारती का कहानी संग्रह सन् १९५५ ई. में प्रकाशित हुआ है। इसमें कुल २५ कहानियाँ संकलित हैं। इन कहानियों का विभाजन तीन खण्डों में किया गया है। इन खण्डों के नाम इस प्रकार हैं --

(अ) चाँद और टूटे हुए लोग। (आ) भूला ईश्वर।

(इ) कलंकित उपासना।

प्रथम खण्ड की कहानियाँ ऐसी कहानियाँ हैं जो इससे पूर्व किसी अन्य संकलन में प्रकाशित नहीं हुई थी। किन्तु द्वितीय और तृतीय खण्ड के सम्बन्ध में स्थिति भिन्न है। द्वितीय खण्ड में वे कहानियाँ हैं, जो इससे पूर्व 'मूर्दों का गाँव' नामक पुस्तक के रूप में प्रकाशित हुई थी। इस खण्ड में केवल 'भूला ईश्वर' शीर्षक नई कहानी जोड़ दी गई है और उसी के नामपर द्वितीय खण्ड का नामकरण किया गया है। "तृतीय खण्ड 'कलंकित उपासना' की कहानियाँ ऐसी कल्पनापरक कहानियाँ हैं जो पहले एक संकलन के रूप में छापी गयी थी। संभवत: इस संकलन का नाम 'कलंकित उपासना' ही रहा होगा।" [१]

---

१ डा. पुष्पा बारकर -'धर्मवीर भारती - व्यक्तित्व एवं कृतित्व'- पृ.१५२।

(२) बंद गली का आखिरी मकान ---

सन १९६९ में प्रकाशित डा.धर्मवीर भारती का अंतिम कहानी संकलन, 'बंद गली का आखिरी मकान' है । इस संकलन में १९५० से लेकर १९६९ तक चौदह वर्षों की चार कहानियाँ संकलित की गई हैं। स्वाभाविक ही 'चाँद और टूटे हुए लोग' की अपेक्षा इस संग्रह की कहानियाँ अधिक चर्चित रही हैं। इलाहाबाद के गली मुहल्लों के यथार्थ माहौल का इन सभी कहानियों में अंकन हुआ है। "इस संग्रह की पहली कहानी 'गुल की बन्नो' की समीक्षा करते हुए समीक्षक डा.संतोष तिवारी ने नई कहानी के प्रेरणा बिंदुओं को उजागर करते हुए और कहानी में मूल बिन्दु को 'कफ़न' और 'रोज' जैसे कहानियों में तलाशते हुए धर्मवीर भारती की 'गुल की बन्नो' कहानी को हिंदी की पहली कहानी स्वीकार किया है।" [१]

(५) उपन्यासकार भारती ---

(१) गुनाहों का देवता ---

सन १९४९ में प्रकाशित 'गुनाहों का देवता' यह भारती का पहला उपन्यास है। 'गुनाहों का देवता' एक तथाकथित आदर्शोन्मुख यथार्थवादी सामाजिक उपन्यास है। यह एक रोमांटिक प्रेमकथा है। इसमें भारती जी ने मध्यवर्गीय जीवन में व्याप्त समस्याओं का विस्तृत एवं मनोरम ढंग से निरुपण किया है। प्राय: सभी पात्र इसी वर्ग से संबंधित हैं तथा सबंधों को अपने-अपने ढंग से बनाए हुए हैं। इस उपन्यास के आधारस्तंभ चन्दर तथा सुधा दो पात्र हैं। चन्दर तथा सुधा का पारस्परिक संबंध उपन्यास के प्रारंभ से अंत तक बना रहता है। वस्तुत: चंदर, सुधा, पम्मी तथा बिनती के पारस्पारिक संबंधों में कई समस्याएँ एक-साथ संपृक्त हैं। चन्दर का तीनों नारी पात्रों से सम्बन्ध रहा हैं। समय के अन्तराल के साथ-साथ यह संबंध बदलता गया है। उपन्यास का कथानक तीन खण्डों में विभक्त है और अंत में एक छोटा-सा उपसंहार है। प्रथम खण्ड की समाप्ति सुधा के बिदाई के साथ हुई है।

---

१ डा.संतोष तिवारी -"धर्मवीर भारती और कमलेश्वर की कहानियों का तुलनात्मक अध्ययन"- (प्रकर - मई,१९८५) पृ.२९ ।

दूसरे खण्ड में पम्मी के प्रसंग है और पम्मी की कथा इस खण्ड की समाप्ति के साथ समाप्त हो जाती है। तीसरे खण्ड में सुधा की व्यथा की विवृत्ति हुई है और सुधा के मृत्यु के साथ यह खण्ड समाप्त किया गया है। उपसंहार में चन्दर द्वारा बिनती को अपनाए जाने और यथार्थ की ठोस धरतीपर उतरने का उल्लेख है। यह उपन्यास मुख्यत: एक पुरुष और तीन नारियों से संबन्धित है।

'गुनाहों का देवता' नाम की सार्थकता प्रतिपादित करने के लिए लेखक ने अपने पात्रों के मुख से चंदर के लिए 'देवता' शब्द का प्रयोग करवाया है।"[१]

(२) सूरज का सातवाँ घोड़ा -

डा.धर्मवीर भारती का दूसरा उपन्यास 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' सन १९५२ में प्रकाशित हुआ। यह उनका प्रयोगात्मक लघु उपन्यास है। भारती ने अपने 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' उपन्यास में व्यापक सामाजिक सत्य को विवेच्य विषय बनाया है। यह हिंदी कथा साहित्य में एक नया प्रयोग है - इसी कारण इसका स्वरूप पारम्परित उपन्यासों से भिन्न है। इसमें पाँच कहानियाँ हैं। उपन्यास की कथा 'पहली दोपहर' से शुरु होकर 'सातवीं दोपहर' तक विद्यमान रहती है। 'सातवाँ दोपहर' की जो कहानी माणिक मुल्ला ने सुनाई थी उसका शीर्षक है, 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' अर्थात वह जो सपने भेजता है। इसमें मुख्य रूप से माणिक ने सात घोड़ों का तात्पर्य स्पष्ट किया है। इसके कथा-चक्र में दिनों की संख्या सात रखने का प्रमुख कारण सूरज के सात घोड़े हैं। 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' ही माणिक मुल्ला का स्वप्नदृष्य है। अत: 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' मध्यवर्ग के बदरंग जीवन की रंगीन कहानी है।

(३) ग्यारह सपनों का देश -

सन १९६० ई.में प्रकाशित 'ग्यारह सपनों का देश' भारती की स्वतंत्र

---

१ हुकुमचंद राजपाल -'धर्मवीर भारती : साहित्य के विविध आयाम'- पृ.१३९।

कृति नहीं है, किन्तु उसमें सर्वाधिक योगदान धर्मवीर भारती का ही है। "रांगेय राघव, प्रभाकर माचवे, उदयशंकर भट्ट, कृष्णा सोबती आदि लेखकों का एक-एक अध्याय एवं भारती के दो अध्याय इस तरह कुल ११ अध्याय संकलित कर एक उपन्यास बनाने का यह एक हिंदी का अनुठा प्रयोग है।" [१]

(६) निबन्धकार भारती --

(१) ठेले पर हिमालय --

सन १९५८ ई.में प्रकाशित 'ठेले पर हिमालय' धर्मवीर भारती की कृति है। यह यात्रा सम्बन्धी ताजगी प्रदान करनेवाला संस्मरणात्मक विवरण है। "प्रस्तुत यात्रा-विवरण का आधार लेखक ने अपने मित्र उपन्यासकार को बनाया है जो ठेले की बर्फ को देखकर अतीत की सुखद रोमांचक स्मृतियों में आत्मलीन होने तथा अभाव के क्षणों में व्याकुलता की स्थिति को वह भली भाँति समझता है।" [२]

(२) पश्यन्ती --

सन् १९६९ ई.में प्रकाशित 'पश्यन्ती' भारती के निबन्धों का संग्रह ग्रंथ है। इसमें कुल सतरह निबंध संकलित है। प्रस्तुत संग्रह को विषय की दृष्टि से सात खण्डों में विभाजित किया गया है। भारती के 'पश्यन्ती' में प्रकाशित निबन्ध सन् १९५९ ई.से लेकर सन् १९६७ ई.के बीच के कालखण्ड के लिखे हुए हैं। भारती का संपूर्ण व्यक्तित्व इसी एक संग्रह में दृष्टव्य है।

(३) कहनी-अनकहनी --

सन् १९७० ई.में प्रकाशित इस संग्रह में ४५ छोटे-छोटे निबंध हैं। प्रस्तुत रचनाएँ ५ फरवरी १९६१ से बसंत पंचमी १९६३ तक के समय के बीच लिखित है। "इनसे भारती-साहित्य तथा साहित्येत्तर स्थितियों, व्यक्तियों एवं आयोजनों के

---

१ डा.पुष्पा वास्कर -'धर्मवीर भारती व्यक्तित्व एवं कृतित्व'- पृ.१४९।

२ हुकुमचंद राजपाल -'धर्मवीर भारती : साहित्य के विविध आयाम'- पृ.१७४।

प्रति जागरूक होने का प्रमाण मिल जाता है। स्वयं अध्यापक होने के कारण अध्यापकीय स्थिति, हिंदी प्रकाशन-व्यवसाय, पाठयक्रम, समीतियों - गोष्ठियों, अभिनंदन समारोहों, भाषा, लिपि समस्या, साम्प्रदायिकता, समाचार पत्रों की दुर्दशा तथा आयोजनों आदि की वस्तुस्थिति को उजागर करने का प्रयत्न किया गया है।[१]

(७) डा.भारतीद्वारा अनुदित कृतियाँ --

(१) आस्कर वाइल्ड की कहानियाँ --

सन १९५९ ई.में प्रकाशित अनुवित कृति में 'आस्कर वाइल्ड' की कुल आठ कहानियाँ हैं। अँग्रेजी साहित्य में वाइल्ड का महत्वपूर्ण स्थान है। एक उँचे दर्जे का कलाकार, भाषा का सम्राट एवं मानवीय अनुभूतियों का चितेरा इस रूप में वाइल्ड को मान्यता मिली है। ऐसे आस्कर वाइल्ड की कहानियों को हिंदी साहित्य में अंशिक रूप ही में क्यों न हो, लाने के लिए भारती प्रशंसापात्र है।

(२) देशान्तर --

सन् १९६० ई.में प्रकाशित 'देशान्तर' यह भारती की अनुदित कृति है। बीसवीं शती के कुल १६१ विदेशी कवियों की कविताओं का छायानुवाद भारती ने किया है। विदेशी विविध कवियों की रचनाएँ 'देशांतर' के माध्यम से हिंदी में प्रथम बार आयी है।

(८) शोधकर्ता भारती--

(१) सिध्द साहित्य -

धर्मवीर भारती ने एम.ए. के उपरान्त डी.लिट.की उपाधि हेतु प्रयाग विश्वविद्यालय में उन्होंने 'सिध्द साहित्य' पर शोधकार्य किया, जो प्रकाशित रूप में उपलब्ध है। "यह शोधकार्य आदिकालीन हिन्दी साहित्य के अज्ञात तथ्यों की

---

१ हुकुमचंद राजपाल -'धर्मवीर भारती : साहित्य के विविध आयाम'- पृ.१९६।

जानकारी देते हुए उन्हें समकालीन जीवन के मूल्यों से जोडने का भी कार्य संपन्न करता है ।"[1] डा.शिवकुमार शर्मा लिखते हैं ---"धर्मवीर भारती ने सिध्द साहित्य में उपलब्ध होनेवाली अश्लीलता पर आध्यात्मिकता का आरोप करना चाहा है।"[2]

(९) समीक्षक भारती ---

(१) प्रगतिवाद : एक समीक्षा -

१९४९ में प्रकाशित भारती की इस समीक्षात्मक कृति में मार्क्सवाद के सैध्दान्तिक एवं ऐतिहासिक पक्षोंपर तथा मार्क्सवाद पर आधारित भारतीय हिंदी साहित्य के प्रगतिवाद की सीमाओं का निर्देश किया गया हैं। इस कृति में १३ अध्याय हैं। यह साहित्यकार की स्वतंत्रता एवं मानवमूल्यों को रेखांकित करनेवाली कृति है।

(२) मानवमूल्य और साहित्य ---

१९६० ई.में प्रकाशित भारती की 'मानव मूल्य और साहित्य' कृति तीन खण्डों में विभाजित है। भारती की इस कृति की पृष्ठभूमि में मानवतावादी स्थापनाएँ रही हैं, जिनमें उन्होंने मानव को बुनियादी तत्व के रूप में स्वीकार किया है और साहित्य में उसी को महत्वपूर्णस्थान दिलाने का प्रयत्न किया है।

(१०) पत्रकार भारती ---

(१) संगम (पत्रिका)- १९४८ से लेकर १९५० ई. तक धर्मवीर भारती ने सहायक संपादक के रूप में इसमें कार्य किया है। 'संगम' सचित्र साप्ताहिक पत्र था। उसका प्रकाशन १५ अगस्त १९४७ से प्रारंभ हुआ और वह सन १९५४ तक प्रकाशित होता रहा। भारती के साथ ओंकार शरद भी सह-संपादक थे।

---

१ डा. पुष्पा वास्कर -'धर्मवीर भारती : व्यक्तित्व एवं कृतित्व'- पृ.३०३ ।

२ डा.शिवकुमार शर्मा-'हिंदी साहित्य : युग और प्रवृत्तियाँ' - पृ.३४ ।

(२) निकष (पत्रिका)- 'निकष' एवं 'नयी कविता' का प्रकाशन सन १९५४ से प्रारंभ हुआ था । इसके योजना के प्रमुख सुत्रधार डा.धर्मवीर भारती ही थे । इलाहाबाद विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में प्राध्यापक के रूप में कार्य करते हुए डा.भारती 'निकष' नामक संकलनों से सम्बन्धित रहे है ।

(३) आलोचना (पत्रिका) : 'आलोचना' पत्रिका में धर्मवीर भारती जी ने सहयोगी संपादक के रूप में कार्य किया है ।

(४) धर्मयुग (पत्रिका) -- 'टाईम्स ऑफ इंडिया' संस्थान की ओर से आए प्रस्ताव को स्वीकार कर डा.धर्मवीर भारती ने अध्यापकी पेशे को नमस्कार किया और 'धर्मयुग' के संपादक होकर बंबई चले गये और कई सालों तक संपादक का दायित्व सफलता के साथ निभाया है ।

(५) हिंदी साहित्य कोश (ग्रंथ) - 'हिन्दी साहित्यकोश' इस ग्रन्थ के सहयोगी संपादक के रूप में भी भारती जी ने कार्य किया है ।

(६) अर्पित मेरी भावना - 'भगवतीचरण वर्मा' के अभिनन्दन ग्रंथ 'अर्पित मेरी भावना' के सम्पादक रूप में धर्मवीर भारती जी ने काम किया है ।

इस प्रकार हम देखते है कि, साहित्य की सभी विधाओं में 'धर्मवीर भारती' जी का साहित्य श्रेष्ठ बन गया है । उनका साहित्य जैसे 'सूरज का सातवाँ घोड़ा', 'अंधायुग' आदि के माध्यम से कुछ मौलिक उद्भावनाएँ भी प्राप्त होती हैं जिनके लिए हिंदी साहित्य उनका सदैव ऋणी रहेगा ।

निष्कर्ष :

धर्मवीर भारती के समग्र साहित्य को पढ़ने के बाद हम इस निष्कर्ष तक पहुँचते हैं कि, स्वातंत्र्य युग में जितने भी हिंदी साहित्यकार हैं, उनमें से डा.धर्मवीर भारती का नाम अग्रिम पंक्तियों के लेखकों में प्रतिष्ठित हो चुका है । वे आधुनिक साहित्य के प्रबुध्द कलाकार है । यद्यपि धर्मवीर भारती पहले सम्पादक है, बाद में साहित्यिक फिर भी साहित्य की कई विधाओं में एक साथ सफलतापूर्वक दौड़ करनेवाले भारती जी का साहित्यिक रूप भी कुछ कम नहीं हैं ।

उनके द्वारा की गई नयी उपलब्धियों के कारण नये साहित्यिकों को प्रेरणा मिलेगी । वे भी कुछ नया करने का हौसला रखेंगे । उनके जीवन की कई ऐसी घटनाएँ हैं, जिनका उनके साहित्य पर प्रभाव पड़ा है । जैसे - उनका व्यक्तित्व रोमांटिक है, जिसे हम उनकी रचनाएँ 'कनुप्रिया', 'गुनाहों का देवता' आदि में देख सकते हैं। उनपर पड़े छायावादी प्रभाव को हम उनकी कविताओं में देखते हैं। प्रथम और द्वितीय महायुध्दों को भारती जी स्वयं अनुभव कर चुके थे । उसके विरुध्द विद्रोह की आवाज उठाने के लिए भारतीजी ने १९४२ के आन्दोलन में हिस्सा लिया था । इसी के परिणाम स्वरुप 'अंधायुग' जैसी रचनाओं का निर्माण हुआ है ।

इस प्रकार धर्मवीर भारती जी हिंदी साहित्य के माने हुए साहित्यकार हैं, जिनकी रचनाओं में उनका स्पष्ट व्यक्तित्व झलकता है ।